दैनिक
विश्वमित्र
• हिन्दी का प्राचीनतम राष्ट्रीय दैनिक •
कोलकाता बुधवार ■ 17 नवम्बर 2021 ■ कार्तिक शुक्ल 13 सम्वत् 2078

व्यापार

सरोज गुप्ता कैंसर केंद्र को अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण में असाधारण उपलब्धि

कोलकाता, 16 नवम्बर (नि.प्र.)। सरोज गुप्ता कैंसर केंद्र और अनुसंधान संस्थान, जिसे आमतौर पर ठाकुरपुकुर कैंसर अस्पताल के रूप में जाना जाता है, ने 2013 में विभाग की स्थापना के बाद से 75 सफल आटोलॉगस अस्थि मज्जा प्रत्यारोपण को पूरा करके एक मील का पत्थर स्थापित किया है। इसकी बीएमटी इकाई यह है कि इसने कोविड-19 महामारी की दूसरी लहर के बाद 3 महीने की अवधि के भीतर 11 प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक पूरे किए हैं। ऑटोलॉगस स्टेम सेल ट्रांसप्लांट या बोन मैरो ट्रांसप्लांट आमतौर पर यहां उन लोगोंमें किया जाता है, जिन्हें हॉजकिन के लिफोमा, मायलोमा और नॉन-हजकिन के लिफोमा जैसी कुछ बीमारियों को ठीक करने के लिए कीमोथेरेपी की उच्च खुराक से गुजरना पड़ता है। एक गैर-लाभकारी धर्मार्थ कैंसर अस्पताल, बीएमटी के लिए किए गए शुल्क अन्य संगठनों की तुलना में बहुत ही उचित और लागत प्रभावी हैं। बीएमटी प्रभारी डॉ. पार्थ प्रतिम गुप्ता के अनुसार, बोन मैरो ट्रांसप्लांटका उपयोग अब दुनिया भर में विभिन्न घातक और गैर-घातक हेमटोलोगिक स्थितियों और बीमारियों के इलाज के लिए किया जाता है। बीएमटी दो प्रकार का होता है। 1) आटोलॉगस बीएमटी जहां रोगी के अपने स्टेम सेल को अस्थि मज्जा समारोह को ठीक करने के लिए संक्रमित किया जाता है। 2) एलोजेनिक बीएमटी जहां स्टेम सेल एचएलए मैचेड डोनर स्वस्थ डोनर से प्राप्त किया जाता है। एक डॉक्टर के रूप में मेरे लिए सबसे बड़ी संतुष्टि यह है कि मेरे मरीज को प्रक्रियाओं के बाद घर लौटते हुए और सामान्य जीवन व्यतीत करते हुए देखना है। एक धर्मार्थ प्रतिष्ठान के रूप में 75वीं बीएमटी को पूरा करना एक बड़ी उपलब्धि है क्योंकि यचह हमारे लिए एक रिकॉर्ड तोड़ने वाला नंबर है। मीडिया को संबोधित करते हुए सरोज गुप्ता कैंसर सेंटर एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के मानद सचिव श्री अंजन गुप्ता ने कहा, हमारा पूर्वी भारत के पहले कुछ कैंसर केंद्रों में से एक है, जो बीएमटी सुविधा प्रदान करता है, पड़ोसी राज्यों की आबादी को पूरा करता है और देश। सरोज गुप्ता कैंसर सेंटर एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. अर्नब गुप्ता ने कहा, मेरे लिए सबसे संतोषजनक बात यह है कि हमारे 75 रोगियों में से अधिकांश बीमारी से मुक्त हैं, इस तथ्य के बावजूद कि वे प्रारंभिक कीमोथेरेपी उपचार में विफल रहे थे।